मृत्यु से मित्रता का मंत्र

हम स्वयं जीकर जीवन को सीख और सिखा सकते है और मृत्यु से मित्रता भी कर सकते हैं, परंतु किसी को मृत्यु ऐसे नहीं सिखा सकते जैसे जीना। काशी में मुक्ति विषयवस्तु पर लिखे गए उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' में भी इस संदेश को कथासूत्र के रूप में पेश किया गया है

■ डॉ. उपेंद्र

सृजन

उपन्यास : काशी मरणान्मुक्ति
लेखक : मनोज ठक्कर और रविंद्र छाजेड़
प्रकाशक : शिव डॉट इन्फो , इंदौर
मूल्य : 501 रुपये

टिवटर पर उपन्यास! वेबसाइट पर इलहाम। चाक्य-सॉफ्ट की पुनरावृत्ति के अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ता अपनी तरह का अनोखा उपन्यास, जिसमें पूरे 69 बार उद्घोष होता है- 'पर यार रख मैं तेरा मुख नहीं।' हर बार नया संदर्भ और अगले उद्घोष की डाकोड़-सी जगाती। वैसे उपन्यास का चाक्य अनोखा वैसे ही दुनिया से इस रचना का परिचय भी। लीक से हटकर विषयवस्तु वाले इस उपन्यास के जन्म का उद्घोष भारत में ट्विटर के अग्रज पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर के ट्वीट पर हुआ। गिलोचन भी उसी के द्वार्ग। रोचक है कि वेद पुराण, आगम-निगम, बौद्ध, जैन, सूफी के राम से कबीर और रैदास के राम तक काशी से जुड़े अब तक के संपूर्ण चिंतन को आत्मसात करने की आतुर इस उपन्यास का आधुनिक जगत में परिचय ट्विटर के माध्यम से हुआ- 'ट्वीट अबाउट रिपुंजल जनी ऑफ ए चांडाल (महामृगांग) इन बनारस।'

मृत्यु से मित्रता का संदेश देते मनोज ठक्कर और रविंद्र छाजेड़ के उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' का पहला पैरा उपन्यास के कथ्य की एक झलक है जाता है-'यह काशीविश्वनाथ त्रिपिर्ण लोग ही था कि कालखंड के इस खंड काशी के महाश्मशान मणिकर्णिका पर अपने भागवथ भागवंड के द्वारा त्रिपथगा गंगा की खोजाते, एक जय को मुक्ति प्रदान करने के लिए बाबा विश्वनाथ उस के कान में तारकमंत्र की फूंकते, फलस्वरूप जरूप पर दृष्टि डालते रिमल फैलते रहे थे। उधर कालखंड के उसी खंग फलस्वरूप जरूपे में, अट्टाट्टि के इस प्रहर एक अघात मां ने अपने नवजात शिशु को गंग किनारे स्थित श्मशान में 'चिताग्नि के पास छोड़ दिया था।' किसी कालखंड में काशी के महाश्मशान से प्रयाग के निकट अक्षयवट फलस्वरूप के श्मशान तक व्याप्त शिवदृष्टि का दृश्य जीवंत करता यह अंश पूर्वपीठिका है रहस्य-रोमांच से भरी चाक की। चाक्य बाबा जगत और अंतर्गत की।

कबीर को समझने वाले यदि मक्का को न समझें तो परमात्मा के रहस्य को नहीं समझ सकते। कभी कबीर तो कभी शिवजेश। कबीर को चाहने वाले यदि मक्का को न चाहें तो मुक्ति कोसों दूर है। 'काशीमरणान्मुक्ति' का चाक्य मक्का जन्मना जारज है, संतान एक अधिक और काशनी का। कबीर काशनी पुत्र थे। लहरतारा तालाब के तट पर त्यक्त। मक्का की मां ने उसे प्रभात निकटस्थ फलस्वरूप के श्मशान पर त्यागा। कबीर को जुलाहा नीरू और नीमा ने पाला। मक्का के पालक तो मक्काह एंशी यशोदा-रावण है, किंतु वे बालक की प्रकृति होते ही काशी विस्थापित होकर जरूप लेते हैं एक मुस्लिम के घर। मक्का के यही उपन्यास चाचा बालक को समस्त धर्मों और संस्कृति-संस्कार से परिचित कराते हैं। साम्य कबीर का किंतु उपन्यास काशी में मुक्ति की विषयवस्तु पर केंद्रित है। इसलिए श्मशान पर जन्मे मक्का को अंतर्चेतना की ही सही बनना चाहता हो था। नामकरण प्रसंग को छोड़ कहीं भी मक्का को पूरे नाम महामृगांग से न पुकारा, सिर्फ मक्का ही कहा गया। मक्का ही मणिकर्णिका के चांडाल प्रमुख का प्रचलित संबोधन भी तो है। उपन्यास का संदेश है कि स्वयं जीकर जीवन को सीख सकते हैं, दूसरों को सिखा भी सकते हैं और साथ ही मृत्यु से मित्रता भी कर सकते हैं, परंतु किसी को मृत्यु ऐसे नहीं सिखा सकते जैसे जीना। प्र.ज्ञ (फलस्वरूप) में जन्मे 'मक्का' ने पूरा जीवन भले ही काशी में ब्र.ह्म ही पर शिवस्वरूप गुरु की [illegible] से काशी छोड़ सामान्य शिष्टता और लौकिकी की सुलौकिक चाक के पश्चात वह भी शिवजी को ही पहिले दोबारा काशी लौटता है और सौभ्यंकाल के दौरान अंतिम आचमन व योगसाधित के बाल से प्राण करता है मृत्यु-आलंद। मृत्यु के साथ ही काशी विश्वनाथ के कनफूंका मंत्र के बाल से एक चांडाल की मुक्ति होती है। उसे शिवधाम की प्राप्ति होती है। काशी मरणान्मुक्ति तो ऐसी स्थिति है, जो किसी ज्ञाता पुरुष में होती पैदी है और किसी के लिए यह यहां से निर्वाण स्वरूपाता में अभिव्यक्त हो उठती है। ज्ञानत ज्योतिर्लिंग, चार धाम, काशी की पंचकोशी और पंचतीर्थ यात्रा-व्यवस्था में संलग्नियों के लिए भले ही यह सहित प्राप्त करने की चाबात हो, परंतु चाकक के लिए तो यह स्वयं के स्वरूप में अवस्थान की चाक है। शिवजी से जुड़े एक-एक पक्ष पर लेखिक दृष्टिपात उपन्यास का सबल पक्ष है। मक्का-'सृष्टि और प्रलय के संतुलन की परिधाया लिए परिवार के सदस्यों के चाकों पर दृष्टि डालने मात्र से ही स्पष्ट: परिभाषित हो जाती है। गणेशजी का वाहन मूषक है तो कार्तिकेय मयूर पर सवार दिखाते हैं एवं नाग शिव की शोभा बढ़ाते हैं। कौन कहता है कि नाग, मूषक को निगल जाता है एवं मयूर, नाग को स्वयं के आहार के रूप में ग्रहण करता है? एक और मां भवानी, शिव पर सवार हैं तो उन्हीं के प्रलय सदृश्य प्रभाव करते भोलेनाथ, वृषभ की सवारी करते दीखाभगमान होते हैं। कहां शिव और कहां पंती। फिर भी दोनों का शिवत्वीक के साथ एकात्मय।'

ट्वीट से काशी आकर 'काशी मरणान्मुक्ति' के रचयिता इस मनोज ठक्कर और रविंद्र छाजेड़ भी श्रद्धा और विश्वास से ओतप्रोत नजर आते हैं। उनका काशी मरणान्मुक्ति की आवधारणा में अगाध विश्वास है कि साथ ही सनातन रसधार की पूंजी इस पुस्तक के माध्यम से बाहर आकर पाठकों को अवश्य ही आंदोलित करेगी और उन्हें कुछ नया देगी। उपन्यासकार इस स्वयं स्वीकारते हैं कि कथा में लिखा कथ्य है उसमें कई गुना अधिक अकथ्य। जहां शिव पुराण इस कथा की रीढ़ की हड्डी है, वहीं अन्य पुराण इसके अंग-प्रत्यंग। स्व. मुंशी प्रेमचंद की पत्रिका 'हंस' के कुछ लेखों से मिली जानकारियों ने भी इसकी खोजबाल को बढ़ाया है। उपन्यास के कथ्य पर विद्वता और सत्यापनीयता का संदेश छायी है। इससे कई बार कथा की गति बाधित होती है, अत्यधिकांक पैठ न रखने वाला पाठक कहीं पन्ने पलट कथा के सूत्र सलगाने को विवश नजर आता है। हां, काशी में मुक्ति की अवधारणा के विकासू को उपन्यासकार इस कालां निराश नहीं करते।

ब्लॉगिंग का भ

मैरिऐज्म-वेबस्टर शब्दकोश ने 'ब्लॉग' ऑफ द ईयर' की संज्ञा दी थी। आज ब्

राजनीतिक की दुनि चुके ब्लॉग के स्व जैसे पेजों के अल लोकप्रियता घटी ने ब्लॉग के मरने 'उदय'। विपु रिप देते हुए न्यूयॉर्क टाइम्स ने कहा कि फे ब्लॉग की जगह ले रही है जहां लोग त तस्वीरें आदि शेयर कर सकते हैं। गूग रही है और हालत मुकाबला करने के साइटेलाने लगी है। विपु रिसर्च सेंटर ने का के. जमादार कहा है। 12 से 17 2006 से 2009 के बीच ब्लॉगिंग का 33 आयुवर्ग के बीच भी 2010 में यह फीसदी कम हुआ। हालांकि इस रिपोर्ट लेकिन लगाय अध्ययनों में इस बात ल में ब्लॉगिंग की लोकप्रियता घटी है, प रूप में है जहां लोग ब्लॉग या माइक्रो बनाकर पोस्ट लिखते हैं। निल्सिन रूप साइट ने ब्लॉगिंग को प्रभावित किए फेसबुक जिस तरह मार खाई है उससे स नेटवर्किंग में बड़ी भूमिका निभा सकत है। सोशल नेटवर्किंग के खास फीचर्स कम लोगों में अपनी बात रखने के इ नेटवर्किंग साइट ब्लॉग से बेहतर विक पहले ज्यादा सामाजिक नहीं करनी पड़ अलग रूप में दिखते हैं। इसकी उन्हें स सेलेब्रिटी, पत्रकार या विशेषज्ञ नहीं है। बाद चाहते हैं और सोशल नेटवर्किंग पर ल पढ़ा देती हैं।

वैसे फेसबुक या ट्विटर भी ब्लॉगिंग जिस ब्लॉगिंग को हम पीछे छोड़ कर रहे हैं विचार को प्रगट करने की मांग करता शैलेश और विचारों के गहन की अपेक्षा भविष्य क्या है? निश्चित रूप से माइ सुलभ संचय नहीं है। 2010 में इंटरनेट जबकि इसी वक्त ट्विटर और फेसबुक से अधिक थी। फेसबुक जैसी साइट ने हैं जहां लंबी पोस्ट के रूप में पूरी बा की कोई सीमा नहीं। ब्लॉगिंग के सम ब्लॉगिंग की सूरम ब्लॉगिंग को बढ़ावा ट्विटर प्रमोशन से गंभीर ब्लॉगरों को प ब्लॉग के प्रचार का एक बड़ा जरिया ब्लॉगरों पर भी तकनीक वैसी है जहां प आदि से बड़ी संख्या में पाठक खींच स

अभिव्यक्ति के अहम माध्यम के रू पहचान गढ़ी है, लेकिन अब ब्लॉगिंग रहेगी। विपु रिसर्च सेंटर्स के मुताबिक ब्लॉगिंग 2010 में शांत फीसदी बढ़ी। लगातार बन रहे हैं और पॉपुलर हो रहे लाख से अधिक ब्लॉग होने का है। ब्लॉग की संख्या इस आंकड़े से काफी और आर्थिक मॉडल के अभाव की पू समझ आती है। ब्लॉगिंग के खत्म नहीं पर लोकप्रियता के सिद्धांत में इस हां, परिपक्व ब्लॉगिंग इस दिशा को नई प्रकट करने का सशक्त माध्यम तो